तमलिनाडु में ओधुवर

प्रलिम्सि के लयि:

ओधुवर, शैव, पथगिम, तरिुमुरई, थेवरम, अव्वैयार, भक्ति परंपरा

मेन्स के लयि:

ओधुवरों को मान्यता दयि जाने से सदयिों पुरानी परंपरा को वैधता और समुदाय को लाभ

[स्रोत: द हदि](#)

चर्चा में क्यों?

हाल ही में तमलिनाडु सरकार ने **15 ओधुवरों** (जसिमें पाँच महलिाएँ शामलि हैं) की नयिुक्ति के आदेश दयि हैं, इन्हें वशिेष रूप से **चेन्नई के शैव मंदरिों में भजन और स्तुति गाकर देवी-देवताओं की पूजा-वंदना करने के लयि नयिुक्त कयिा गया** है।

तमलिनाडु में ओधुवर:

- **परचिय:**
  - ओधुवर तमलिनाडु के हदि मंदरिों में भजन गायन करते हैं **लेकनि वे पुजारी नहीं होते** हैं। उनका मुख्य कार्य **शैव मंदरिों में भगवान शवि की स्तुति करना** है, ये गीत-भजन **थरिुमुराई भजन संग्रह से लयि जाते** हैं। वे भक्ति भजन गाते हैं, उन्हें **पवति्र गर्भगृह में प्रवेश की अनुमति नहीं होती** है।
- **ओधुवर परंपरा की शुरुआत:**
  - प्राचीन काल से ही ओधुवरों की परंपरा रही है, **भक्ति आंदोलन की शुरुआत के साथ ही इनकी मान्यता का पता चलता** है। तमलिनाडु में **6ठी और 9वीं शताब्दी के बीच ओधुवर परंपरा अच्छी तरह** वकिसति हुई।
  - इस अवधि के दौरान अलवार और नयनार के नाम से प्रचलति **अनेकों संत-कवयिों ने क्रमशः भगवान वषि्णु एवं भगवान शवि की स्तुति में भजनों के रूप में भक्ति काव्य की रचना की। ओधुवर इस समृद्ध संगीत व भक्ति वरिासत के संरक्षक के रूप में उभरे**।

अलवार और नयनार: तमलि भक्ति परंपरा के संत:

- **अलवार:**
  - **भगवान वषि्णु की भक्ति:** अलवार **बारह वैष्णव** (भगवान वषि्णु के भक्त) **संत-कवयिों का एक समूह** था। उनकी रचनाएँ मुख्य रूप से भगवान वषि्णु के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा-भक्ति पर केंद्रति थीं और इन रचनाओं में मोक्ष प्राप्त करने हेतु **ईश्वर के प्रति समर्पण (प्रपत्ति) की अवधारणा पर बल दयिा गया था।**
  - **काव्य रचनाएँ:** अलवार के भक्ति भजन और कवतिाएँ प्रमुख **वैष्णव ग्रंथ, नालयरि दवि्य प्रबंधम** में संकलति हैं। तमलि भाषा में रचति इन रचनाओं में भगवान वषि्णु के दवि्य गुणों एवं रूपों का वर्णन है।
- **नयनार:**
  - **भगवान शवि की भक्ति:** नयनार **63 शैव** (भगवान शवि के भक्त) **संत-कवयिों का एक समूह** था। ये भगवान शवि के प्रति पूर्णतः समर्पति थे और उनकी स्तुति में भजन व काव्य की रचना करते थे, ये रचनाएँ भक्ति **मार्ग तथा परमात्मा के प्रति प्रेम पर केंद्रति थीं।**
  - **काव्य रचनाएँ:** नयनारों के भजन और काव्य रचनाएँ **शैव धर्मग्रंथों के संग्रह थरिुमुराई** में संकलति की गईं। तमलि भाषा में लखिति इन रचनाओं में भगवान शवि की वभिन्नि रूपों तथा दवि्य गुणों का वर्णन है।

वर्तमान संदर्भ में ओधुवरों की प्रासंगिकता:

- **धार्मिक महत्त्व:** तमिलनाडु के मंदिरों के दैनिक और महोत्सव अनुष्ठानों में ओधुवरों का काफी महत्त्व है। थेवरम और थिरुवसागम दो प्राचीन तमिल ग्रंथ हैं, यह भगवान शिव के भजन तथा स्तुतियों का संकलन है, इन **गीतों के गायन का कार्य प्राचीन काल से ओधुवर ही करते आए हैं।**
- **सामुदायिक जुड़ाव:** अधिकांशतः ओधुवर बहिष्कृत समुदायों से संबंधित होते हैं और**मंदिरों में किसी भी कार्य के लिये उनकी भूमिका का निर्धारण किया जाना उनके लिये आर्थिक अवसर है** । इसके अतिरिक्त उनका प्रदर्शन स्थानीय समुदाय को एकजुट करने के साथ ही एकता व अपनेपन की भावना को बढ़ावा देता है।
- **तमिल भाषा का संरक्षण:** तमिल भाषा के संरक्षण में ओधुवरों का योगदान अहम है। अपने गीत-पाठों के माध्यम से **वे आने वाली पीढ़ियों के लिये प्राचीन तमिल ग्रंथों की समझ व पठन-पाठन को सरल बनाते हैं।**
- **भक्ति-भावना को प्रोत्साहन:** ओधुवर मंदिरों के भीतर भक्तिमय वातावरण का निर्माण करने में मदद करते हैं।**उनकी भावपूर्ण प्रस्तुति उपासकों में धर्मपरायणता और आध्यात्मिकता की भावना पैदा करती है।**

तमिलनाडु में ओधुवरों से संबंधित मुद्दे व चिंताएँ:

- **आर्थिक सुभेद्यता:**
  - कई ओधुवरों को अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिये संघर्ष करना पड़ता है,**क्योंकि उनकी आय का एक बड़ा हिस्सा मंदिर के दान और चढ़ावे पर निर्भर करता है।** यह आर्थिक असुरक्षा ओधुवरों की परंपरा के पतन का कारण भी बन सकती है।
- **मान्यीकरण का अभाव:**
  - मंदिर के अनुष्ठानों और तमिल संस्कृति के संरक्षण में ओधुवरों के योगदान पर अक्सर ध्यान नहीं दिया जाता है।**उन्हें सीमित मान्यता दिया जाना** उन्हें हतोत्साहित कर सकता है।
- **रुचि में कमी:**
  - आर्थिक अस्थिरता के कारण इस बात की काफी संभावना है कि युवा पीढ़ी के बीच ओधुवर परंपरा को बनाए रखने के प्रति दिलचस्पी में काफी कमी आ सकती है। **यह इस परंपरा की निरंतरता के लिये चिंता का विषय है।**
- **प्रौद्योगिकी और आधुनिकीकरण:**
  - रिकॉर्डेड संगीतों के प्रचलन और आधुनिकीकरण की शुरुआत के साथ लोगों द्वारा धार्मिक एवं भक्ति संबंधी सामग्री के उपयोग के तरीके में बदलाव आ गया है। **डिजिटल मीडिया और समकालीन संगीत रूपों के साथ प्रतिस्पर्द्धा करना ओधुवरों के लिये चुनौतीपूर्ण हो** सकता है।
- **संस्थागत समर्थन का अभाव:**
  - संगीत नाटक अकादमी आदि जैसे मान्यता प्राप्त सरकारी संस्थान **ओधुवरों की चिंताओं के प्रति उदासीन रहे हैं** , जबकि इन संस्थानों के सहयोग से ओधुवर समुदायों की पीड़ाओं को काफी कम किया जा सकता है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. भारत की संस्कृति एवं परंपरा के संदर्भ में 'कलारीपयट्टू' क्या है? (2014)

(a) यह शैवमत का एक प्राचीन भक्ति पंथ है जो अभी भी दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में प्रचलित है।
(b) यह काँसे और पीतल के काम की एक प्राचीन शैली है जो अभी भी कोरोमंडल क्षेत्र के दक्षिणी हिस्से में पाई जाती है।
(c) यह नृत्य-नाटिका का एक प्राचीन रूप है और मालाबार के उत्तरी हिस्से में जीवंत परंपरा है।
(d) यह एक प्राचीन मार्शल कला है और दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में जीवंत परंपरा है।

उत्तर: D

प्रश्न. मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2016)

1. तमिल क्षेत्र के सिद्ध (सित्तर) एकेश्वरवादी थे तथा मूर्तिपूजा की निंदा करते थे।
2. कन्नड़ क्षेत्र के लिंगायतों पुनर्जन्म के सिद्धांत पर प्रश्नचिह्न लगाते थे और जाति अधिक्रम को अस्वीकार करते थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: C

??????:

प्रश्न. भक्ति साहित्य की प्रकृति का मूल्यांकन करते हुए भारतीय संस्कृति में इसके योगदान का निर्धारण कीजिये। (2021)

प्रश्न. श्री चैतन्य महाप्रभु के आगमन से भक्ति आंदोलन को एक असाधारण नई दिशा मिली थी। चर्चा कीजिये। (2018)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/odhuvars-in-tamil-nadu